!! ॐ श्रीपरमात्मने नमः!!

गोरक्षा-हमारा परम कर्तव्य

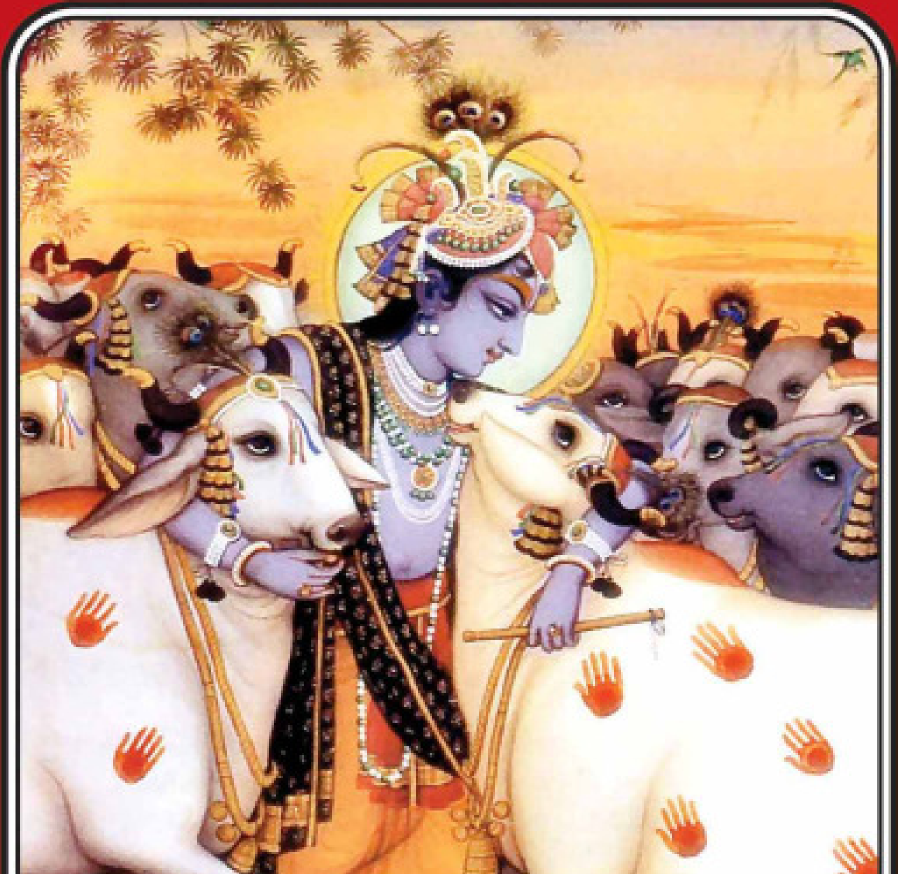

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी
महाराजके वचनोंसे संगृहीत

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य

[परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजके वचनोंसे संगृहीत]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

संकलन तथा सम्पादन—
राजेन्द्र कुमार धवन

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

विषय-सूची

१. गोरक्षाकी आवश्यकता १

२. गायके दूधकी विशेषता ३

३. गोरक्षाके लिये क्या करें? ४

४. आवश्यक बातें ६

५. प्रश्नोत्तरी ७

६. एक निवेदन १२

७. 'गावो विश्वस्य मातरः'.. १३

८. शास्त्रोंमें गो-महिमा १५

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य

गोरक्षाकी आवश्यकता

पशु, पक्षी, जड़ी, बूटी, वृक्ष, लता आदि जितने भी जंगम-स्थावर प्राणी हैं, उन सभीमें दैवी और आसुरी सम्पत्तिवाले प्राणी होते हैं। मनुष्यको उन सबकी रक्षा करनी ही चाहिये; क्योंकि सबकी रक्षाके लिये, सबका प्रबन्ध करनेके लिये ही यह मनुष्य बनाया गया है। उनमें भी **जो सात्त्विक पशु, पक्षी, जड़ी, बूटी आदि हैं, उनकी तो विशेषतासे रक्षा करनी चाहिये; क्योंकि उनकी रक्षासे हमारेमें दैवी-सम्पत्ति बढ़ती है।** जैसे, गोमाता हमारी पूजनीया है तो हमें उसकी रक्षा और पालन करना चाहिये; क्योंकि गाय सम्पूर्ण सृष्टिका कारण है—‘**गावो विश्वस्य मातरः**’। गायके घीसे ही यज्ञ होता है; भैंस आदिके घीसे नहीं। यज्ञसे वर्षा होती है। वर्षासे अन्न और अन्नसे प्राणी पैदा होते हैं।

उन प्राणियोंमें खेतीके लिये बैलोंकी जरूरत होती है। वे बैल गायोंके होते हैं। बैलोंसे खेती होती है अर्थात् बैलोंसे हल आदि जोतकर तथा कुएँ आदिके जलसे सींचकर खेती की जाती है। खेतीसे अन्न, वस्त्र आदि निर्वाहकी चीजें पैदा होती हैं, जिनसे मनुष्य, पशु आदि सभीका जीवन-निर्वाह होता है। निर्वाहमें भी गायके घी-दूध हमारे खाने-पीनेके काम आते हैं। उन घी-दूधसे हमारे शरीरमें बल और अन्तःकरणमें सात्त्विक भाव बढ़ते हैं। इसी तरहसे जितनी जड़ी-बूटियाँ हैं, उनमेंसे सात्त्विक जड़ी-बूटीसे कायाकल्प होता है, रोग दूर होता है और शरीर पुष्ट होता है। इसलिये हमलोगोंको सात्त्विक पशु, पक्षी, जड़ी-बूटी आदिकी विशेष रक्षा करनी चाहिये, जिससे हमारे इहलोक और परलोक दोनों सुधर जायँ।

***   ***   ***

मनुष्योंके लिये गाय सब दृष्टियोंसे पालनीय है। गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धि होती है। आजके अर्थप्रधान युगमें तो गाय अत्यन्त ही उपयोगी है। गोपालनसे, गायके दूध, घी, गोबर आदिसे धनकी वृद्धि होती है। हमारा देश कृषि-प्रधान है। अतः यहाँ खेतीमें जितनी प्रधानता बैलोंकी है, उतनी प्रधानता अन्य किसीकी भी नहीं है। भैंसेके द्वारा भी खेती की जाती है, पर खेतीमें जितना काम बैल कर सकता है, उतना भैंसा नहीं कर सकता। भैंसा बलवान् तो होता है, पर वह धूप सहन नहीं कर सकता। धूपमें चलनेसे वह जीभ निकाल देता है, जबकि बैल धूपमें भी चलता रहता है। कारण कि भैंसेमें सात्त्विक बल नहीं होता, जबकि बैलमें सात्त्विक बल होता है।

***   ***   ***

गाय और माय (माँ) बेचनेकी नहीं होतीं। जबतक गाय दूध और बछड़ा देती है, बैल काम करता है, तबतक उनको रखते हैं। परन्तु जब वे बूढ़े हो जाते हैं, तब बेच देते हैं। यह कितनी कृतघ्नताकी बात है! कितने पापकी बात है! गाँधीजीने ‘नवजीवन’ अखबारमें लिखा था कि बूढ़ा बैल जितना गोबर और गोमूत्र करता है, उससे कम खर्चा करता है। जितना घास खाता है, उतना गोबर और गोमूत्र कर देता है।

राजस्थानमें कई जगह ऐसा हुआ है कि बिजली चली जाती है, जिससे टोंटीमें जल आना बन्द हो जाता है और जलके बिना लोग दु:ख पाते हैं! पहले घरोंमें बैल होते थे, लाव (रस्सी) और चरस होता था, जिससे लोग कुएँमेंसे पानी निकाल लेते थे। अब बैल बेच दिये, फिर कुएँसे जल कैसे आये? मेहनत किये बिना खाने-पीनेकी आदत पड़ गयी है। बस, टोंटी खोल दी और पानी आ गया। परन्तु बिना मेहनतके मिलनेवाली चीज अधिक दिन चलेगी नहीं। वैज्ञानिकोंने कहा है कि एक समय ऐसा आनेवाला है, जब न बिजली मिलेगी, न पेट्रोल-डीजल! तब क्या दशा होगी लोगोंकी? इसलिये आपलोगोंसे कहता हूँ कि गाय-बैलको, बछड़ा-बछड़ीको बेचो मत। अभी भी तेल महँगा हो रहा है और आप ट्रेक्टरोंसे तेल खर्च कर रहे हो। जब तेल नहीं मिलेगा, तब बिना ट्रेक्टरोंके खेती कैसे करोगे? बैलोंको तो खत्म कर रहे हो!

*** *** ***

गायोंके दर्शनका, उनकी रक्षाका, उनको घरमें रखनेका बड़ा माहात्म्य है। गायसे खेती (जमीन) पुष्ट होती है और खेतीसे गाय पुष्ट होती है। दोनोंका आपसमें सम्बन्ध है। गाँवमें खेती करनेवाले लोग गायोंका जैसा पालन कर सकते हैं, वैसा शहरमें रहनेवाले नहीं कर सकते। अत: खेती करनेवालोंसे मेरी प्रार्थना है कि आप दु:ख भी पायें, कष्ट भी उठायें तो भी गायोंका पालन करें। गाय रखनेसे आपको लाभ होगा, नुकसान नहीं होगा।

बड़ी मुश्किल बात यह हुई है कि आज लोगोंकी दृष्टि पैसोंकी तरफ हो गयी कि पैसा अधिक होना चाहिये। आप पैसोंसे वस्तु लेकर जी सकते हो, पैसोंसे नहीं जी सकते। आपके जीवनमें वस्तु काम आती है, पैसा काम नहीं आता। पहले किसानलोग घासका, अन्नका संग्रह रखते थे, पर आज घास बेचकर पैसोंका संग्रह करते हैं!

हम भले ही मर जायँ, पर गायको नहीं मरने देंगे—ऐसा विचार हो जाय तो गायोंका पालन करना बड़ा सुगम हो जायगा। मैंने गायोंका पालन करनेवालोंकी ऐसी-ऐसी बातें सुनीं हैं कि 'जबतक घास रहेगा, गायोंको घास खिलायेंगे। घास खत्म हो जायगा तो अन्न गायोंको खिलायेंगे। अन्न खत्म हो जायगा तो गायें भी मरेंगी और हम भी मरेंगे। हम जीते रहें और गायें मर जायँ, यह नहीं होगा।'

रुपयोंके लोभसे बहुत नुकसान हुआ है। आज देसी गायोंका कत्ल कर रहे हैं और विदेशी गायें ला रहे हैं, इससे बड़ा भारी नुकसान है! कसाईखानोंमें बड़ी संख्यामें पशुओंको मार रहे हैं! पशुओंके बिना मनुष्योंका जीना मुश्किल है। पशुओंसे ही मनुष्य जीते हैं। मनुष्योंकी जीवनी-शक्ति पशुओंसे ही आती है।

गायके दूधकी विशेषता

गायका दूध जितना सात्त्विक होता है, उतना सात्त्विक दूध किसीका भी नहीं होता। गायके दूधसे निकला घी 'अमृत' कहलाता है। स्वर्गकी अप्सरा उर्वशी पुरूरवाके पास गयी तो उसने अमृतकी जगह गायका घी पीना ही स्वीकार किया—'**घृतं मे वीर भक्ष्यं स्यात्**' (श्रीमद्भा० ९। १४। २२)।

भैंसके दूधमें घी ज्यादा होनेसे वह शरीरको मोटा तो करता है, पर पह दूध सात्त्विक नहीं होता। गाड़ी चलानेवाले जानते हैं कि गाड़ीका हॉर्न सुनते ही गायें सड़कके किनारे हो जाती हैं, जबकि भैंस सड़कमें ही खड़ी रहती है। इसलिये भैंसके दूधसे बुद्धि स्थूल होती है। सैनिकोंके घोड़ोंको गायका दूध पिलाया जाता है, जिससे वे घोड़े बहुत तेज होते हैं। एक बार सैनिकोंने परीक्षाके लिये कुछ घोड़ोंको भैंसका दूध पिलाया, जिससे घोड़े खूब मोटे हो गये। परन्तु जब नदी पार करनेका काम पड़ा, तब वे घोड़े पानीमें बैठ गये! भैंस भी पानीमें बैठा करती है, इसलिये वही स्वभाव घोड़ोंमें भी आ गया।

ऊँटनीका भी दूध निकाला जाता है, पर उसका दूध तामसी होनेसे दुर्गतिमें ले जानेवाला होता है। स्मृतियोंमें ऊँट, कुत्ते, गधे आदिको अस्पृश्य बताया गया है। बकरीका दूध नीरोग करनेवाला एवं पचनेमें हल्का होता है, पर वह गायके दूधकी तरह बुद्धिवर्धक और सात्त्विक बात समझनेके लिये बल देनेवाला नहीं होता।

दूधके लिये गायको सुई लगाना महापाप

गायको इंजेक्शन लगाकर दुहना गौहत्या करना है! यह भयंकर पाप है! सुई लगाकर दुहा हुआ दूध पीना गायका खून पीनेके समान है! वह दूध नहीं है, खून है। उसे काममें नहीं लेना चाहिये। दूध वह है, जो गाय अपनी प्रसन्नतासे दे। जो सुई लगाकर गाय दुहते हैं, वे राक्षस हैं। वे गौभक्षक हैं, हिन्दू कहलानेयोग्य नहीं हैं।

सुई लगानेसे गायको बड़ा कष्ट होता है। कसाई तो गायको एक बार मारता है, पर बार-बार सुई लगाना गायको बार-बार मारना है। यह एक बार मारनेकी अपेक्षा ज्यादा पाप है!

ज्यादा दूध पानेके लोभसे गायको पीड़ा देना बहुत बड़ा पाप है! अपने स्वार्थके लिये दूसरेको पीड़ा देनेके समान अधम, नीच काम कोई है ही नहीं—***'पर पीड़ा सम नहिं अधमाई'*** (मानस, उत्तर० ४१। १)। जो दूसरेके दुःखसे दुःखी होता है, उसको अपने दुःखसे दुःखी नहीं होना पड़ता। उसका दुःख सदाके लिये मिट जाता है। परन्तु जो दूसरेको दुःख देता है, उसको तरह-तरहका दुःख मिलता है। जैसे ***'एक गुना दान, सहस्र गुना पुण्य'*** एक रुपयेके दानसे हजार रुपयोंका पुण्य होता है, ऐसे ही गायको एक सुई लगाते ही आपके लिये हजारों सुइयाँ तैयार होती हैं! वे सुइयाँ चुभेंगी तो आपको भयंकर दुःख भोगना पड़ेगा.....पड़ेगा.....पड़ेगा.....! उस भयंकर दुःखसे बचानेके लिये आपसे प्रार्थना की जाती है कि गायको सुई लगाना छोड़ दो।

[आजकल गाय-भैंस दुहनेसे पहले उन्हें 'ऑक्सीटोसिन' का इंजेक्शन लगाया जाता है। इस खतरनाक रसायनका कुछ अंश दूधमें भी चला जाता है, जिसके परिणामस्वरूप विकलांगता, मन्दबुद्धि, हृदय, जिगर, गुर्दे और पेटकी बीमारियाँ तथा अनेक स्त्रीरोग पैदा होते हैं। यह बात अनेक समाचार-पत्रोंमें भी प्रकाशित हो चुकी है।]

गोरक्षाके लिये क्या करें?

मैं दो चीजोंके लिये विशेष काम करता हूँ—अच्छी (कल्याणकारी) पुस्तकोंका प्रचार और गायोंकी रक्षा। वर्तमानमें हिन्दुओंपर और गायोंपर बड़ी आफत आ रही है! स्वराज्यप्राप्तिसे पहले नेतालोगोंने यह बात कही थी कि स्वराज्य मिलते ही सबसे पहला काम गोवधको बन्द करना होगा। ऐसे मैंने व्याख्यान सुने हैं। परन्तु स्वराज्यप्राप्तिके बाद गोवध बन्द होना दूर रहा, उल्टे सैंकड़ोंगुना अधिक गोवध होना शुरू हो गया!

गीतामें काम, क्रोध और लोभ—तीनोंको नरकका दरवाजा बताया है। लोभके कारण बड़ी संख्यामें गायोंकी हत्या हो रही है। गोवध करनेसे जो लाभ दीखता है, वह कितने दिन चलेगा—इसपर विचार ही नहीं करते। अगर गोवध न करके गायोंका पालन किया जाय तो विशेष लाभ होगा। परन्तु सुने कौन?

अभी गायोंपर संकट आया हुआ है। आप गायोंकी रक्षा, उनका पालन कर सकें तो आपका धन, बल, जीवन, आयु सब सफल हो जायगा। इनको सफल करनेका अभी बहुत बढ़िया मौका है। गायोंकी रक्षा करनेके समान कोई पुण्य नहीं है। कठिनता सहकर जो पुण्य कार्य किया जाता है, उसका अधिक माहात्म्य होता है।

गायोंकी रक्षाके लिये भाई-बहनोंको चाहिये कि वे गायोंका पालन करें, उनको अपने घरोंमें रखें। गायका ही दूध-घी खायें, भैंस आदिका नहीं। घरोंमें गोबर-गैसका प्रयोग किया जाय। गायोंकी रक्षाके उद्देश्यसे ही गोशालाएँ बनायी जायँ, दूधके उद्देश्यसे नहीं। जितनी गोचर-भूमियाँ हैं, उनकी रक्षा की जाय तथा सरकारसे और गोचर-भूमियाँ छुड़ाई जायँ। सरकारकी गोवध-नीतिका विरोध किया जाय कि वह देशकी रक्षाके लिये पूरे देशमें तत्काल पूर्णरूपसे गोहत्या बन्द करे।

*** *** ***

प्रश्न—एक शंका है कि भगवान् गायको इतना चाहते हैं, सन्त-महात्मा भी गायको बहुत चाहते हैं, तो भगवान् कम-से-कम इतनी वर्षा कर दें कि गायोंके लिये घास हो जाय। गायोंपर ही संकट क्यों आया है? हमलोगोंके तो कर्म ही ऐसे हैं, पर गायको तो देना चाहिये!

उत्तर—अरे, आपकी परीक्षा कर रहे हैं भगवान्! गाय बेचारी कुछ बोल सकती नहीं, उसको आप घास नहीं देते तो आप परीक्षामें फेल हो रहे हो! भगवान् आपको चेतावनी दे रहे हैं। जैसे आपका भाग्य है, ऐसे गायोंका भी भाग्य है। परन्तु आपकी परीक्षा हो रही है कि मनुष्य होकर भी अगर गायोंका पालन नहीं करोगे तो फिर मनुष्यजन्म नहीं मिलेगा। जैसे बारह महीना पढ़नेके बाद विद्यार्थीकी परीक्षाका दिन आता है, ऐसे ही अभी आपकी परीक्षाका दिन आया है।

गायोंका पालन, रक्षा करनेका बड़ा भारी पुण्य है। आजकल तो ज्यादा पुण्य है! आजकल खेती करनेवाले गाय नहीं रखते! खेतीसे गायका पालन होता है और गायसे खेती बढ़िया होती है। खेतमें गायें बैठें, गोबर-गोमूत्र करें तो खेत कभी पुराना नहीं होता, नया-का-नया रहता है।

कितने दु:खकी बात है कि लोग घरकी गायको, बछड़ा-बछड़ीको यों ही छोड़ रहे हैं! आपको कोई रोटी न दे और घरसे निकाल दे तो क्या दशा होगी? आप तो माँग भी सकते हो, पर गाय बेचारी माँग सकती नहीं, बोल सकती नहीं! खानेके लिये खेतमें जाती है तो वहाँ मार पड़ती है! अब वह करे क्या? इसलिये आप गायका पालन नहीं करोगे तो आपको दण्ड होगा।

आप भगवान्‌से तो कृपा चाहते हो, पर पशुओंपर कृपा करते नहीं, तो आप कृपा पानेके अधिकारी नहीं हो। जो पशुओंको मारता है, मांस खाता है, वह कृपाका पात्र नहीं होता। आप अपनेसे कमजोरको मार देते हो और खा जाते हो, तो आपको भी कोई मार दे तो आप रोनेके, पश्चात्ताप करनेके, शिकायत करनेके भी पात्र नहीं हो।

*** *** ***

प्रश्न—आजकल शहरोंमें परिवारका पालन करना भी समस्या है, फिर गायका पालन कैसे करें?

उत्तर—विचार कर लें कि यह काम करना है, तब काम होगा। अनुकूलता-प्रतिकूलता देखते रहनेसे काम नहीं होता। पहले ही हार स्वीकार करनेसे सुगम काम भी कठिन हो जाता है। आवश्यकता आविष्कारकी जननी है। घरमें गायको रखनेका विचार कर लें तो काम हो जायगा।

अगर धर्मका पालन करनेमें सुगमता होती और रुपये ज्यादा मिलते तो कई धर्मात्मा हो जाते। पर धर्मके पालनमें कुछ कठिनता सहनी पड़ती है। कठिनता सहे बिना धर्मका अनुष्ठान नहीं होता। धर्मका पालन करनेसे निर्वाह हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है।

*** *** ***

प्रश्न—यहाँ प्रतिदिन बड़ी संख्यामें गोहत्या हो रही है! आपसे प्रार्थना है कि गोरक्षाके लिये प्रेरणा करें।

उत्तर—वास्तवमें किसी भी जीवको कष्ट देना शास्त्र-निषिद्ध है। आपको कोई मारे तो आपको अच्छा लगता है क्या? अच्छा नहीं लगता तो किसीको भी मत मारो। **आपको जो बुरा लगे, वह दूसरोंके प्रति मत करो—यह धर्मका सार है।** किसी भी जीवका नाश मत करो। किसीकी भी हिंसा करना पाप है, अन्याय है। जैसे आपको प्राण प्यारे हैं, ऐसे सबको प्राण प्यारे हैं। जीवोंकी हत्या करनेसे अन्तमें दुःख पाना पड़ेगा। यहाँ बच जाओ तो यमराजके यहाँ दुःख पाना पड़ेगा।

सब पशुओंमें गायके द्वारा दूसरोंका बहुत ज्यादा हित होता है, इसलिये उसकी हत्याका बहुत ज्यादा पाप है। गायकी तो हवा लगनेसे मनुष्य पवित्र हो जाता है! जो बड़े-बड़े रोगी हैं, वे रोजाना जाकर सुबह और शाम दोनों समय गायको सहलायें, प्यार करें, पैर दबायें तो उनका रोग मिट जायगा, आप करके देख लो! गायकी रक्षा करनेसे बहुत लाभ होता है। मनुष्य गायकी रक्षा करे तो वह भी मनुष्यकी रक्षा करती है। ऐसी अनेक घटनाएँ हुई हैं। इसलिये गायको मारना बहुत बड़ा पाप है। हिंसाका परिणाम बहुत खराब होता है। आप गायोंको बचानेका उद्योग करो, नहीं तो देशकी बड़ी दुर्दशा होगी! बड़ा भारी उपद्रव होगा! आप गायोंकी रक्षा करो तो आपका देश सुरक्षित होगा।

आवश्यक बातें

१. विदेशी गाय वास्तवमें गायकी श्रेणीमें नहीं आती। विदेशी गायके गलकम्बल और कन्धा दोनों ही नहीं होते; अत: वास्तवमें वह गाय नहीं है, प्रत्युत 'गवय' (गाय-जैसा एक पशु) है। इसलिये देसी गायका ही दूध पीना चाहिये। हमारे देशकी गायें सौम्य और सात्त्विक होती हैं, इसलिये उनका दूध भी सात्त्विक होता है, जिसको पीनेसे बुद्धि तीक्ष्ण होती है और स्वभाव सौम्य, शान्त होता है। विदेशी गायोंका दूध तो ज्यादा होता है, पर उनके दूधमें उतनी सात्त्विकता नहीं होती तथा उनमें गुस्सा भी ज्यादा होता है। अत: उनका दूध पीनेसे मनुष्यका स्वभाव भी क्रूर होता है। विदेशी गायोंके दूधमें घी कम होता है और वे खाती भी ज्यादा हैं। विदेशी गायोंके जो बैल होते हैं, वे खेतीमें भी काम नहीं आ सकते; क्योंकि उनके कन्धे न होनेसे उनपर जुआ नहीं रखा जा सकता।

२. गायको हम माता मानते हैं। अत: उसका दूध पीनेमें दोष नहीं है। गायका दूध पीयेंगे, तभी गायकी रक्षा होगी! परन्तु उसके बछड़ा-बछड़ीको दूध न पिलाकर खुद दूध पी लेना ठीक नहीं है। यह अन्याय है! अगर बछड़ीको गायका पर्याप्त दूध पिलाया जाय तो गाय बननेपर उसका दूध भी ज्यादा होगा। बछड़ीको कम दूध दोगे तो आगे उसका दूध ज्यादा नहीं होगा। अत: बछड़ा-बछड़ीको दूध पिलाकर ही खुद दूध पीना चाहिये। दूसरी बात, दूध दुहनेसे गायका दूध बढ़ता है। यदि दूध न दुहें, केवल बछड़ा-बछड़ी ही दूध पियें तो गायका दूध स्वत: ही कम होगा। यदि गायको ठीक खिलाया जाय और तीन समय दूध दुहा जाय तो दूध ज्यादा होगा।

३. गायकी सेवा करनेसे सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं। रोजाना सुबह-शाम गायको सहलानेसे, उसकी पीठ आदिपर हाथ फेरनेसे, पैर दबानेसे गाय प्रसन्न होती है। गायके प्रसन्न होनेपर साधारण रोगोंकी तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े असाध्य रोग भी मिट जाते हैं। लगभग बारह महीनेतक करके देखना चाहिये।

४. गायके दूध, घी, गोबर-गोमूत्रमें जीवनी-शक्ति रहती है। गायके घीके दीपकसे शान्ति मिलती है। गायका घी लेनेसे विषैली तथा नशीली वस्तुका असर नष्ट हो जाता है और बुद्धि तेज होती है। परन्तु अन्त:करण अशुद्ध होनेके कारण आजकल अच्छी चीज भी बुरी लगती है, गायके घीसे भी दुर्गन्ध आती है!

५. बूढ़ी गायका मूत्र तेज होता है और आँतोंमें घाव कर देता है। परन्तु दूध पीनेवाली बछड़ीका मूत्र सौम्य होता है; अत: वही लेना चाहिये।

६. गायका संकरीकरण नहीं करना चाहिये। यह सिद्धान्त है कि शुद्ध वस्तुमें अशुद्ध वस्तु मिलानेसे अशुद्धकी ही प्रधानता हो जाती है; जैसे—छाने हुए जलमें अनछाने जलकी कुछ बूँदें डालनेसे सब जल अनछाना हो जाता है।

७. पशु-पक्षियोंको अपनी जूठन दे सकते हैं, पर गायको जूठन नहीं देनी चाहिये।

प्रश्नोत्तरी

[गोरक्षा, गोसेवा, गोसंवर्धनके विषयमें सन्तोंका अभिमत जानने हेतु मई २००२ में परमश्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराजके पास एक 'प्रश्नावली' आयी थी, जिसमें विविध प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर लिखे थे। उसमें यह निर्देश था कि प्रश्नोंके साथ लिखे जिस उत्तरको आप सही मानते हों, उसपर सहीका निशान लगा दें। यदि कोई अन्य उत्तर या अभिमत देना चाहें तो उसे अलगसे लिखवा दें। श्रीस्वामीजी महाराजने प्रश्नोंके साथ लिखे जिस उत्तरको सही माना, उसे यहाँ कोष्टकके भीतर सामान्य अक्षरोंमें मुद्रित किया गया है। परन्तु जो उत्तर श्रीस्वामीजी महाराजने अपनी ओरसे लिखवाये, उन्हें यहाँ काले अक्षरोंमें मुद्रित किया गया है।]

प्रश्न १—*गोहत्याबन्दी आप किस अपेक्षासे चाहते हैं?*

उत्तर—धार्मिक और आर्थिक—दोनों दृष्टियोंसे चाहते हैं।

प्रश्न २—*यदि धार्मिक आधारपर चाहते हैं तो धर्मनिरपेक्ष शासनमें क्या यह सम्भव है?*

उत्तर—आर्थिक दृष्टिसे भी गोरक्षा उपयोगी होनेसे यह धर्मनिरपेक्ष शासनमें भी सम्भव है।

प्रश्न ३—*देशके कतिपय नागरिक गायको अवध्य नहीं मानते हैं; अत: वे वे पूर्ण गौहत्याबन्दीका विरोध करते हैं। आप उस विरोधको शान्त करनेके लिये कौन-सा उपाय सुझाते हैं?*

उत्तर—[भारतकी विपुल जनता गायको अवध्य और पूजनीय मानती है, मात्र इसी आधारपर सम्पूर्ण गोवंशकी हत्याको पूर्णत: प्रतिबन्धित किया जाना चाहिये।]

गौहत्यासे एक ही बार मांस मिलेगा; परन्तु गौ जीती रहेगी और उसका वंश चलता रहेगा तो सदा दूध, दही, घी आदि मिलते रहेंगे तथा खेतीके लिये बैल भी मिलते रहेंगे।

प्रश्न ४—*गाय भारतीय कृषि और अर्थतन्त्रका मूलाधार होनेसे प्राचीनकालसे अवध्य रही; परन्तु गत पचास वर्षोंकी कृषि और अर्थव्यवस्थामें जो परिवर्तन आया, उस कारण गाय अनार्थिक/अनुपयोगी होती जा रही है, तब पूर्ण गौहत्याबन्दी-कानूनसे क्या हल निकलेगा? आप क्या सोचते हैं? यह भी ध्यानमें रखें कि तीन-चार राज्योंमें पूर्ण गौहत्याबन्दी लागू है, फिर भी वहाँ गौहत्या होती है; हत्याके लिये अन्य राज्योंमें उनका परिवहन जारी है।*

उत्तर—[केन्द्र और राज्योंकी कृषि-नीतिमें परिवर्तन करके, कृषिमें बैलोंका उपयोग बढ़ायें, गोबर-गोमूत्रके खाद और गोमूत्र-आधारित कीटनियन्त्रकका उपयोग बढ़ायें, जनताके आरोग्य हेतु गोमूत्र-आधारित मानव-औषधियोंका उत्पादन, प्रचार, उपयोग बढ़ायें तो समुचित हल होगा।]

पेट्रोल समाप्त होता जा रहा है। जब पेट्रोल नहीं रहेगा, तब खेती कैसे करेंगे?

प्रश्न ५—उपभोक्ताको भैंसके दूध-दही-घी आदिसे हटाकर गोरसकी ओर लौटानेके लिये सरकारको

क्या करने हेतु सुझाव देते हैं?

उत्तर—[भैंसके दूध, जर्सी आदि संकर गायोंके दूधकी हानियोंका भी प्रचार किया जाना चाहिये।]

गायके दूधमें अधिक गुण हैं। गायके दूधमें सात्त्विक बल है, जबकि भैंसके दूधमें राजसी-तामसी बल है।

प्रश्न ६—*इन चालीस-पचास वर्षोंके सघन प्रचार और प्रयोगसे अब कृषक रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयोंसे अधिक उपज मिलती है—यह देख चुका है। ट्रैक्टर आदि यन्त्रोंसे कृषि आसान और त्वरित हो गयी है—ऐसा अनुभव कर चुका है। तब उपज/आयका लक्ष्य रखनेवाले कृषकको परम्परागत कृषिकी ओर लौटाने हेतु आप क्या सुझाव देते हैं?*

उत्तर—[रासायनिक खाद और कीटनाशकोंकी तुलनामें गोबर-गोमूत्रकी खाद सस्ती हो और उससे अधिक और श्रेष्ठ उपज मिलती है—यह शासकीय कृषि-वैज्ञानिकोंको सिद्ध करके कृषकोंको प्रत्यक्ष दिखाना चाहिये।]

रासायनिक खादसे खेत जल्दी खराब हो जाते हैं—यह भी किसान देख चुका है! पैदावार न होनेसे कई किसान आत्महत्या कर चुके हैं। गाय-बैलोंसे खेती भी होगी और खाद भी।

प्रश्न ७—*कृषि-वैज्ञानिकों/सरकारों/कृषकोंका मत बना है कि बढ़ती जनसंख्याकी उदरपूर्तिके लिये नवीन कृषि-पद्धति ही सक्षम/सफल है, परम्परागत कृषि-पद्धतिसे देश भूखों मर जाता या मर जायगा। इस बारेमें आपका क्या मत है?*

उत्तर—यह भ्रम है। दीखनेमें उपज ज्यादा दीखती है, पर वास्तवमें खेतकी जमीन जल्दी खराब हो जायगी।

प्रश्न ८—*क्या आप यह मानते हैं कि गोचर/चारागाह/ओरजका क्षेत्रफल घटनेके कारण गोवंश पालना गोपालक/कृषकके लिये अब कठिन हो गया है, इसलिये गौहत्या बढ़ती जा रही है?*

उत्तर—अभी कठिन दीखता है, पर कठिन होगा नहीं। गोचरभूमि न छोड़नेसे खेतकी भूमि रासायनिक खादसे खराब हो जायगी। फिर न अन्न पैदा होगा, न घास!

प्रश्न ९—*जनसंख्याके बढ़ते दबाव, नई-नई विकास योजनाओं, औद्योगिक/प्रौद्योगिक उन्नतिके कारण गोचर क्षेत्रफलका कायम रहना, पारम्परिक पद्धति चलते रहना असम्भव हुआ। अब इन नवीन परिस्थितियोंमें गोचर-सुरक्षा, गोचर-वृद्धिके लिये आप क्या सुझाव देते हैं?*

उत्तर—लोगोंको गोचर-भूमिकी आवश्यकता समझायी जाय। स्वार्थभाव मिटनेसे ही गोचर-भूमिकी रक्षा होगी।

प्रश्न १०—*वर्तमान स्थितियोंमें गोचरभूमिकी वृद्धि/संरक्षणके लिये आप क्या सुझाव देते हैं?*

उत्तर—सरकार गोचरभूमिकी रक्षाके लिये कड़ा कानून बनाये और गोचरभूमिपर कब्जा करनेवालोंको दण्ड दे।

प्रश्न ११—*आजका किसान स्वयं भी गोचर दबा रहा है—खेतकी मेढ़ बढ़ाकर या अन्यथा प्रकारसे अपनी बड़ी-बड़ी मेड़ोंको अपने चारागाहको भी कृषि-भूमिमें बदल रहा है, तब आप गोचर-सुरक्षाके लिये सरकारसे क्या करवाना चाहते हैं?*

उत्तर—गोचरभूमि नहीं छोड़ेंगे तो रासायनिक खादसे खेत भी खराब हो जायगा और घास भी पैदा नहीं होगी।

प्रश्न १२—*भैंसको विशेष संरक्षण नहीं होते हुए भी भैंस दुगुनी-तिगुनी होती जा रही हैं और गो-संरक्षणके लिये इतनी आवाजके बाद भी उनकी संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है; क्योंकि अर्थयुगमें पालक लाभके आधारपर पशु पालता है, भावनासे नहीं। ऐसी स्थितिमें आप सरकारोंसे क्या करवाना चाहते हैं?*

उत्तर—अभी लाभ दीखता है, पर परिणाममें यह लाभ स्थायी नहीं रहेगा। स्वार्थभावके कारण दृष्टि सीमित (अल्प) रहनेसे परिणाम नहीं दीखता।

प्रश्न १३—*'तेज भागो' युगमें बैलोंसे परिवहन घटा है और ट्रैक्टर, ट्रकोंसे बढ़ा है। इसको पूर्ववत् स्थापित करने हेतु आप सरकारोंसे क्या करवाना चाहते हैं?*

उत्तर—बैलोंकी हत्या रोकी जाय।

प्रश्न १४—*कसाई कहते हैं कि बैलोंका वध करना, उनका गोमांस बेचना उनका धन्धा है, इससे आजीविका चलाना उनका मौलिक अधिकार है। ऐसा सर्वोच्च न्यायालयने भी मान्य किया है। इस बारेमें आपका क्या अभिमत है?*

उत्तर—यह धन्धा वास्तवमें धन्धा नहीं है। किसी भी जीवको मारनेका अधिकार नहीं है, प्रत्युत रक्षा करनेका अधिकार है।

प्रश्न १५—सर्वोच्च न्यायालय यह भी मानता है कि पन्द्रह वर्षसे अधिक आयुके बैल देशकी अर्थ और कृषि-व्यवस्थापर बोझ हैं। स्वस्थ और योग्य गोवंशका चारा-दाना बूढ़े बैलको देनेसे स्वस्थ गोवंशकी हानि होगी। इस बारेमें आपका क्या अभिमत है?

उत्तर—बूढ़ा बैल जितना चारा-दाना खाता है, उससे अधिक गोबर-गोमूत्रसे आर्थिक लाभ होता है। यह बात महात्मा गाँधीजीने भी 'नवजीवन' पत्रमें लिखी है।

प्रश्न १६—परन्तु आर्थिक मजबूरियोंसे किसान उसे नहीं पालना चाहता। तब उसके पालनेकी आप क्या व्यवस्था करवाना चाहते हैं?

उत्तर—आर्थिक दृष्टिसे भी बूढ़े बैलके गोबर-गोमूत्रसे अधिक लाभ होता है।

प्रश्न १७—*किसी उपायसे ऐसे बैलोंको न पाला जा सके तो क्या उनका वध होने दिया जाय?*

उत्तर—[नहीं, गोबर-गोमूत्रकी उपयोगिता सिद्ध कर उसे इस आधारपर आर्थिक बनाकर बचाया जाय।]

प्रश्न १८—*नवीन कृषि-व्यवस्थामें ऐसा बहुत कम हो रहा है कि बछड़ोंको बड़ा करके कृषिमें काम लें। अतः किसान उन्हें बेचता है और इसी कारण भारी संख्यामें बछड़ोंका कत्ल हो रहा है। इसे रोकने हेतु आप क्या सुझाव देना चाहते हैं?*

उत्तर—[भारतीय कृषिको पुरजोर प्रयास करके, शनैः-शनैः पूर्णतः बैल-आधारित किया जाय।] **उन्हें ऐसा करनेसे रोकना चाहिये।**

प्रश्न १९—*आप चाहते हैं कि कत्लखाने बन्द हो जायँ, विशेषतः बृहत् यान्त्रिक कत्लखाने; जैसे अलकबीर, देवनार, अल्लाना, पंजाब मीट आदि। परन्तु मांसभोजी जनताके भोजनकी स्वतन्त्रता कैसे छीनी जा सकती है? इस बारेमें आप क्या सुझाव दे रहे हैं?*

उत्तर—[किसी भी छोटे या बड़े कत्लखानेमें किसी भी गोवंशका तो कभी कत्ल न हो, इसे सरकारें कानून और विशिष्ट पुलिस फोर्ससे सुनिश्चित करें।]

प्रश्न २०—*आप चाहते हैं कि मांस-निर्यात बन्द हो; परन्तु सरकारको भारी विदेशी मुद्राकी हानि होगी। तब मांस-निर्यातको आप किस प्रकार रुकवाना चाहते हैं?*

उत्तर—विदेशी मुद्रासे उतना लाभ नहीं होगा, जितना लाभ पशुओंसे होगा।

प्रश्न २१—*कत्लखानों-संचालकोंका कथन है कि गोवंशका कत्ल नहीं करते, तब भी आप इन कत्लखानोंको बन्द करवाना चाहते हैं क्या? और क्यों?*

उत्तर—कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता। अतः किसी भी पशुको मारना अन्याय है। मारे गये पशुओंकी आह नाश कर देगी।

प्रश्न २२—*सरकार कहती है कि वह गोमांस-निर्यातकी अनुमति नहीं देती, फिर भी आप मांस-निर्यातपर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाना चाहते हैं, ऐसा क्यों?*

उत्तर—[क्योंकि वास्तवमें ये गोमांसका निर्यात करते हैं। सरकारें अवैध निर्यातको रोक नहीं पातीं। अतः गोमांस-निर्यात ही नहीं, मांस-निर्यात ही बन्द होना चाहिये। अहिंसक देशकी यही नीति हो।]

प्रश्न २३—*आप विदेशी नस्लसे देशी नस्लोंके संकरीकरणके पक्षमें क्यों नहीं हैं?*

उत्तर—[संकर गायके दूधमें देशी जैसी गुणवत्ता नहीं होती।]

संकरीकरण करनेसे गोवंशकी महत्ता नष्ट हो जायगी, उसमें वह ताकत नहीं रहेगी।

प्रश्न २४—*स्थानीय देशी नस्लोंके परस्पर संक्रमणको आप उचित मानते हैं क्या?*

उत्तर—देशी नस्लोंका भी संकरीकरण नहीं करना चाहिये। हाँ, करना ही हो तो ऊँची नस्लवालेका ऊँची नस्लवालेसे ही संकरीकरण करना चाहिये। यह सिद्धान्त है कि शुद्ध वस्तुमें अशुद्ध वस्तु मिलानेसे अशुद्धकी ही प्रधानता हो जाती है; जैसे—छाने हुए जलमें अनछाने जलकी कुछ बूँदें मिलानेसे सब जल अनछाना हो जाता है।

प्रश्न २५—*पशुपालनकी वर्तमान परिस्थितियोंमें और देशको दूधकी भारी आवश्यकताके कारण क्या आप देशी और संकर दोनोंको चलने देना चाहते हैं क्या?*

उत्तर—विदेशी गायका दूध अधिक होनेपर भी उसमें घी कम होता है, पर देशी गायका दूध कम होनेपर भी उसमें घी अधिक होता है।

स्थान—गीताभवन, स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश)

दिनांक—१७.५.२००२

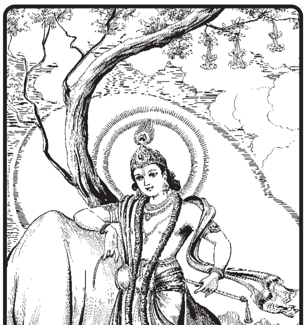

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

एक निवेदन

सच्चिदानन्द परमात्माको तथा समस्त धर्माचार्यों एवं महानुभावोंका सादर सविनय अभिवादन करते हुए मैं अपने कुछ विचार प्रकट करनेका प्रयास कर रहा हूँ।

गोवधसे देशकी बड़ी भारी हानि हो रही है, जिसका परिणाम बड़ा भयंकर होगा। हमारे धर्मप्रधान देशमें रुपयोंके लोभसे बड़ी संख्यामें गोवध किया जा रहा है। गीतामें लोभको नरकका द्वार बताया गया है। रुपयोंके लोभके कारण ही गोवध-बन्दीमें आड़ लगायी जा रही है। नये-नये कसाईखाने लगाये जा रहे हैं। गोवधसे पैदा हुआ रुपया महान् हानिकारक एवं बुद्धि भ्रष्ट करनेवाला है। जिसमें असंख्य प्राणियोंकी आह भरी हुई है, उस रुपयेसे बड़ा भारी अनर्थ होगा। उन रुपयोंसे कभी शान्ति नहीं हो सकती।

गायोंसे रुपये पैदा किये जा सकते हैं, पर रुपयोंसे गायें पैदा नहीं की जा सकतीं। गायोंकी परम्परा तो गायोंसे ही चलेगी। रुपये तो गायोंके जीवित रहनेसे ही पैदा होंगे। गायोंको मारकर रुपये पैदा करना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी इसीमें है कि गायोंका संरक्षण और संवर्धन किया जाय।

गीतामें आया है—‘**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन**’ (२। ४७)। अतः हम सभीका कर्तव्य है कि फलकी चिन्ता न करते हुए अपनी तरफसे गोवध-बन्दीके लिये भरसक प्रयत्न करें।

पौष कृष्ण ७, संवत् २०६०
(दिनांक १६.१२.२००३)

विनीत,
स्वामी रामसुखदास,
गीताभवन नं० ३
पो० स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

'गावो विश्वस्य मातरः'

सादर हरि:स्मरण!

सभी साधु-सन्तोंसे मेरी प्रार्थना है कि अभी गायोंकी हत्या जिस निर्ममतासे हो रही है, वैसी तो अँग्रेजों व मुसलमानोंके साम्राज्यमें भी नहीं होती थी। अब हम सभीको मिलकर इसे रोकनेका पूर्णरूपसे प्रयास करना चाहिये। इस कार्यको करनेका अभी अवसर है और इसका होना भी सम्भव है। गायके महत्त्वको आपलोगोंको क्या बतायें; क्योंकि आप तो स्वयं दूसरोंको बतानेमें समर्थ हैं। यदि प्रत्येक महन्तजी व मण्डलेश्वरजी चाहें तो हजारों आदमियोंको गोरक्षाके कार्य हेतु प्रेरित कर सकते हैं। आप सभी मिलकर सरकारके समक्ष प्रदर्शन कर शीघ्र ही गोवंशके वधको पूरे देशमें रोकनेका कानून बनवा सकते हैं। यदि साधु-समाज इस पुनीत कार्यको हिन्दूधर्मकी रक्षा हेतु शीघ्र कर लें तो यह विश्वमात्रके लिये बड़ा कल्याणकारी होगा। अभी चुनावका समय भी नजदीक है। इस मौके पर आप सभी एकमत होकर यह प्रस्ताव पारित कर प्रदर्शन व विचार करें कि हर भारतीय इस बार अन्य मुद्दोंको दरकिनार कर केवल उसी नेता या दलको अपना मत दे, जो गोवंश-वध अविलम्ब रोकनेका लिखित वायदा करे तथा आश्वस्त करे कि सत्तामें आते ही वे स्वयं एवं उनका दल सबसे पहला कार्य समूचे देशमें गोवंश-वध बन्द करानेका करेगा।

देशी नस्लकी विशेष उपकारी गायोंके वंशतकके नष्ट होनेकी स्थिति पैदा हो रही है! ऐसी स्थितिमें यदि समय रहते चेत नहीं किया गया तो अपनी और अपने देशवासियोंकी क्या दुर्दशा होगी? इसका अन्दाजा लगाना मुश्किल है! आप इस बातपर विचार करें कि वर्तमानमें जो स्थिति गायोंकी अवहेलना करनेसे उत्पन्न हो रही है, उसके कितने भयंकर दुष्परिणाम होंगे। अगर स्वतन्त्र भारतमें गायोंकी हत्या-जैसा जघन्य अपराध भी नहीं रोका जा सका तो यह कितने आश्चर्य और दु:खका विषय होगा! आप सभी भगवान्‌को याद करके इस सत्कार्यमें लग जायँ कि हमें तो सर्वप्रथम गोहत्या बन्द करवानी है, जिससे सभीका मंगल होगा। इससे बढ़कर धर्म-प्रचारका और क्या पुण्य-कार्य हो सकता है!

पुन: सभीसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप सभी शीघ्र ही इस उचित समयमें गायोंकी हत्याको रोकनेका एक जन-जागरण अभियान चलाते हुए सभी गोभक्तों व राष्ट्रभक्तोंको जोड़कर सरकारको बाध्य करके बता दें कि अब तो गोहत्या बन्द करनेके अतिरिक्त सत्तामें आरूढ़ होनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दें कि जनता-जानार्दनने देशमें गोहत्या बन्द करानेका दृढ़ संकल्प ले लिया है।

गायके दर्शन, स्पर्श, छाया, हुंकार व सेवासे कल्याण, सुखद अनुभव, सद्भाव एवं अन्त:करणकी पवित्रता प्राप्त होती है। गायके घी, दूध, दही, मक्खन व छाछसे शरीरकी पुष्टि होती है व नीरोगता आती है। गोमूत्र व गोबरसे पंचगव्य और विविध औषधियाँ बनाकर काममें लेनेसे अन्न, फल व साग-सब्जियोंको रासायनिक विषसे बचाया जा सकता है। गायोंके खुरसे उड़नेवाली रज भी पवित्र होती है। जिसे गोधूलि-वेला कहते हैं, उसमें विवाह आदि शुभकार्य करना उचित माना जाता है। जन्मसे लेकर अन्तकालतकके सभी धार्मिक संस्कारोंमें पवित्रता हेतु गोमूत्र व गोबरका बड़ा महत्त्व है। गायकी महिमा तो आप और हम जितनी बतायें, उतनी ही थोड़ी हैं। आश्चर्य तो यह है कि

सब कुछ जानते हुए भी गायोंकी रक्षामें हमारे द्वारा विलम्ब क्यों हो रहा है?

गायकी रक्षा करनेसे भौतिक विकासके साथ-साथ आर्थिक, व्यावहारिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं अनेक प्रकारके विकास सम्भव हैं; लेकिन गायकी हत्यासे विनाशके सिवाय कुछ भी नहीं दिखता है। अत: अब भी यदि हम जागें तो गोहत्याको सभी प्रकारसे रोककर मानवको होनेवाले विनाशसे बचा सकते हैं। गोसेवा, रक्षा, संवर्धन तथा गोचर-भूमिकी रक्षा करनेसे पूरे संसारका विकास सम्भव है। आज गोवध करके गोमांसके निर्यातसे जो धन प्राप्त होता है, उससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। इसलिये ऐसे गोहत्यासे प्राप्त पापमय धनके उपयोगसे कथित विकास ही विनाशकारी हो रहा है। यह बहुत ही गम्भीर चिन्ताका विषय है!

अन्तमें सभी साधु-समाजसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि अब शीघ्र ही आप सभी और जनता मिलकर गोहत्या बन्द करानेका दृढ़ संकल्प लेनेकी कृपा करें तो हमारा व आपका तथा विश्वमात्रका कल्याण सुनिश्चित है। इसीमें धर्मकी वास्तविक रक्षा है और धर्मकी रक्षामें ही हम सबकी सुरक्षा है।

प्रार्थी,

स्वामी रामसुखदास

—'कल्याण' अप्रैल २००४, में प्रकाशित

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

शास्त्रोंमें गो-महिमा

गायकी महिमा

गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्म-
स्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्॥

(विष्णुधर्मोत्तर० २। ४२। ५८)

'गौ-रूपी तीर्थमें गंगा आदि सभी नदियों तथा तीर्थोंका आवास है, उसकी परम पावन धूलिमें पुष्टि विद्यमान है, उसके गोबरमें साक्षात् लक्ष्मी विराजमान है और उसे प्रणाम करनेसे धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करनेयोग्य है।'

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् परं स्मृतम्॥

(महाभारत, अनु० ५१। ३३)

'गौएँ स्वर्गकी सीढ़ियाँ हैं, गौएँ स्वर्गमें भी पूजी जाती हैं, गौएँ समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं, उनसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।'

पितरो वृषभा ज्ञेया गावो लोकस्य मातरः।
तासां तु पूजया राजन् पूजिताः पितृदेवताः॥

(महाभारत, आश्व० वैष्णव०)

'राजन्! बैलोंको जगत्का पिता समझना चाहिये और गौएँ संसारकी माता हैं। उनकी पूजा करनेसे सम्पूर्ण पितरों और देवताओंकी पूजा हो जाती है।'

सभा प्रपा गृहाश्चापि देवतायतनानि च।
शुद्ध्यन्ति शकृता यासां किं भूतमधिकं ततः॥

(महाभारत, आश्व० वैष्णव०)

'जिनके गोबरसे लीपनेपर सभा-भवन, पौंसले, घर और देवमन्दिर भी शुद्ध हो जाते हैं, उन गौओंसे बढ़कर और कौन प्राणी हो सकता है?'

यस्यैकापि गृहे नास्ति धेनुर्वत्सानुचारिणी॥
मङ्गलानि कुतस्तस्य कुतस्तस्य तमः क्षयः।

(अत्रिसंहिता २१८-२१९)

'जिसके घरमें बछड़ेसहित एक भी गौ नहीं है, उसका मंगल कैसे होगा और उसके पापोंका नाश कैसे होगा?'

गावो देयाः सदा रक्ष्याः पाल्याः पोष्याश्च सर्वदा।

(बृहत्पराशरस्मृति ५। २३)

'गौओंका सदा दान करना चाहिये, सदा उनकी रक्षा करनी चाहिये और सदा उनका पालन-

पोषण करना चाहिये।'

गाय सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाली है

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥

(महाभारत, अनु० ५१। २७)

'वीर नरेश! गायोंके नाम और गुणोंका कीर्तन तथा श्रवण करना, गायोंका दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है और इनसे सम्पूर्ण पापोंका नाश तथा कल्याणकी प्राप्ति होती है।

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥

(महाभारत, अनु० ५१। ३२)

'गौओंका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थानकी शोभा बढ़ा देता है और वहाँके सारे पापोंको खींच लेता है।'

गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवति नित्यशः।
अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
गवां रजः खुरोद्भूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(पद्मपुराण, सृष्टि० ५७। १६४-१६५)

'जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गौका स्पर्श करता है, वह सब पापोंसे मुक्त हो जाता है। जो गौओंके खुरसे उड़ी हुई धूलिको सिरपर धारण करता है, वह मानो तीर्थके जलमें स्नान कर लेता है और सभी पापोंसे छुटकारा पा जाता है।'

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति
गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित्॥

(बृहत्पराशरस्मृति ५। १०)

'स्पर्श कर लेनेमात्रसे ही गौएँ मनुष्यके समस्त पापोंको नष्ट कर देती हैं और आदरपूर्वक सेवन किये जानेपर अपार सम्पत्ति प्रदान करती हैं। वे ही गायें दान दिये जानेपर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं। ऐसी गौओंके समान और कोई भी धन नहीं है।'

गोचर-भूमि छोड़नेकी महिमा

गोप्रचारं यथाशक्ति यो वै त्यजति हेतुना।
दिने दिने ब्रह्मभोज्यं पुण्यं तस्य शताधिकम्॥
तस्माद् गवां प्रचारं तु मुक्त्वा स्वर्गान्न हीयते।
यश्छिनत्ति द्रुमं पुण्यं गोप्रचारं छिनत्त्यपि॥
तस्यैकविंशपुरुषाः पच्यन्ते रौरवेषु च।

गोचारघ्नं ग्रामगोपः शक्तो ज्ञात्वा तु दण्डयेत्॥

(पद्मपुराण, सृष्टि० ५९। ३८-४०)

'जो मनुष्य गौओंके लिये यथाशक्ति गोचरभूमि छोड़ता है, उसको प्रतिदिन सौसे अधिक ब्राह्मण-भोजनका पुण्य प्राप्त होता है। गोचरभूमि छोड़नेवाला कोई भी मनुष्य स्वर्गसे भ्रष्ट नहीं होता। जो मनुष्य गोचरभूमिको रोक लेता है और पवित्र वृक्षोंको काट डालता है, उसकी इक्कीस पीढ़ी रौरव नरकमें गिरती है। जो व्यक्ति गौओंके चरनेमें बाधा देता है, समर्थ ग्रामरक्षकको चाहिये कि उसे दण्ड दे।'

तासां प्रचारभूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानवः।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्॥

(विष्णुधर्मोत्तर० खण्ड ३, अ० २९१)

'गौओंके चरनेके लिये गोचर भूमिकी व्यवस्था करके मनुष्य निःसन्देह अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त करता है।'

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥

(पद्मपुराण, पाताल० ३१। ८)

'(यमराजने जनकसे कहा—) राजन्! एक बार तुमने चरती हुई गायके कार्यमें विघ्न डाला था, उसी पापके कारण तुम्हें नरकका द्वार देखना पड़ा।'

गायको चारा देनेकी महिमा

घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः।
अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकम्॥

(महाभारत, अनु० ६९। १२)

'जो एक वर्षतक प्रतिदिन स्वयं भोजनके पहले दूसरेकी गायको एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेवाला होता है।'

तृणोदकादिसंयुक्तं यः प्रदद्यात् गवाह्निकम्॥
सोऽश्मेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः।

(बृहत्पराशरस्मृति ५। २६-२७)

'जो गौओंको प्रतिदिन जल और तृणसहित भोजन प्रदान करता है, उसे अश्वमेधयज्ञके समान पुण्य प्राप्त होता है, इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं है।'

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने।
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपःसु च॥
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने।
भुवः पर्यटने यत्तु वेदवाक्येषु सर्वदा॥
यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षया च लभेन्नरः।
तत्पुण्यं लभते सद्यो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च॥

'तीर्थस्थानोंमें जानेसे, ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे जो पुण्य प्राप्त होता है, सभी व्रत-उपवासों एवं तपस्याओंमें जो पुण्य है, महादान करनेमें जो पुण्य है, श्रीहरिके पूजनमें जो पुण्य है, पृथ्वीकी परिक्रमा

करनेमें जो पुण्य है, वेदवाक्योंके पठन-पाठनमें जो पुण्य है और समस्त यज्ञोंकी दीक्षा ग्रहण करनेमें जो पुण्य है, वे सभी पुण्य मनुष्यको केवल गायोंको तृण खिलानेमात्रसे तत्काल मिल जाते हैं।'

गो-सेवाकी महिमा

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः।
अर्चयेत् सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते।

(महाभारत, अनु० ८१। ३३-३५)

'जो पुरुष गौओंकी सेवा और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है, उसपर सन्तुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओंके साथ मनसे भी कभी द्रोह न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये, उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओंकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।'

तासामौषधदानेन विरोगस्त्वभिजायते।
विप्रमोच्य भयेभ्यश्च न भयं विद्यते क्वचित्॥

(विष्णुधर्मोत्तर० खण्ड ३, अ० २९१)

'रुग्णावस्थामें गौओंको ओषधि प्रदान करनेसे मनुष्य स्वयं भी सभी रोगोंसे मुक्त हो जाता है। गौओंको भयसे मुक्त कर देनेपर मनुष्य स्वयं भी सभी भयोंसे मुक्त हो जाता है।'

गो-भक्तके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः।
स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयुः॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात्।
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात्॥
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम्।
न किञ्चिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत॥

(महाभारत, अनु० ८३। ५०-५२)

'गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तुकी इच्छा करता है, वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियोंमें भी जो गौओंकी भक्त हैं, वे मनोवाञ्छित कामनाएँ प्राप्त कर लेती हैं। पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है और कन्यार्थी कन्या। धन चाहनेवालेको धन और धर्म चाहनेवालेको धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। भारत! गोभक्तके लिये यहाँ कुछ भी दुर्लभ नहीं है।'

गौओंको दुःख देनेका परिणाम

गावो देयाः सदा रक्ष्याः पाल्याः पोष्याश्च सर्वथा।

ताडयन्ति च ये पापा ये चाक्रोशन्ति ता नराः॥
नरकाग्नौ प्रपच्यन्ते गोनिःश्वासप्रपीडिताः।

(बृहत्पराशरस्मृति ५। २३-२४)

'गौओंका सदा दान करना चाहिये, सदा उनकी रक्षा करनी चाहिये और सदा उनका पालन-पोषण करना चाहिये। जो मूर्ख उन्हें डाँटते तथा मारते-पीटते हैं, वे गौओंके दुःखपूर्ण निःश्वाससे पीड़ित होकर घोर नरकाग्निमें पकाये जाते हैं।'

प्रचारे वा निवाते वा बुधो नोद्वेजयेत गाः।
तृषिता ह्यभिवीक्षन्त्यो नरं हन्युः सबान्धवम्॥

(महाभारत, अनु० ६९। १०)

'जब गौएँ स्वच्छन्दतापूर्वक विचर रही हों अथवा किसी उपद्रवशून्य स्थानमें बैठी हों, तब उन्हें पीड़ित नहीं करना चाहिये। यदि वे प्यासी होकर देखती हैं तो उत्पीड़कके सम्पूर्ण वंशको नष्ट कर देती हैं।'

गोकुलस्य तृषार्तस्य जलार्थे वसुधाधिप।
उत्पादयति यो विघ्नं तं विद्याद् ब्रह्मघातिनम्॥

(महाभारत, अनु० २४। ७)

'राजन्! जो प्याससे व्याकुल गायोंके जल पीनेमें विघ्न डालता है, उसे ब्रह्महत्यारा समझना चाहिये।'

गवां यो मनसा दुःखं वाञ्छत्यधमसत्तमः।
स याति निरयस्थानं यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥

(पद्मपुराण, पाताल० १९। ३४)

'जो नराधम मनमें भी गायोंको दुःख देनेकी इच्छा कर लेता है, उसे चौदह इन्द्रोंके कालतक नरकमें रहना पड़ता है।'

तस्माज्ज्ञात्वा हरिं निन्दन् गोषु दुःखं समाचरन्।
कदापि नरकान्मुक्तिं न प्राप्नोति नरेश्वर॥

(पद्मपुराण, पाताल० १९। ३६)

'राजन्! जो मनुष्य जान-बूझकर भगवान्‌की निन्दा करता है और गायोंको दुःख देता है, उसका नरकसे कभी छुटकारा नहीं हो सकता।'

गोरक्षाके लिये प्राण देनेकी महिमा

गोकृते स्त्रीकृते चैव गुरुविप्रकृतेऽपि वा।
हन्यन्ते ये तु राजेन्द्र शक्रलोकं व्रजन्ति ते॥

(महाभारत, आश्व० वैष्णव०)

'गोरक्षा, अबला स्त्रीकी रक्षा और गुरु तथा ब्राह्मणकी रक्षाके लिये जो प्राण दे देते हैं, राजेन्द्र युधिष्ठिर! वे मनुष्य इन्द्रलोक (स्वर्ग)-में जाते हैं।

गोरक्षाके लिये शस्त्र धारण करनेकी आज्ञा

गवार्थे ब्राह्मणार्थे वा वर्णानां वापि सङ्करे।

गृह्णीयातां विप्रविशौ शस्त्रं धर्मव्यपेक्षया॥

(बौधायनस्मृति २। २। ८०)

'गौ और ब्राह्मणकी रक्षाके लिये और वर्णसंकरतासे प्रजाको बचानेके लिये ब्राह्मण और वैश्यको भी शस्त्र ग्रहण कर लेना चाहिये।'

गोहत्याका परिणाम

घातकः खादको वापि तथा यश्चानुमन्यते।
यावन्ति तस्या रोमाणि तावद् वर्षाणि मज्जति॥

(महाभारत, अनु० ७४। ४)

'गौकी हत्या करनेवाले, उसका मांस खानेवाले तथा गोहत्याका अनुमोदन करनेवाले लोग गौके शरीरमें जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोंतक नरकमें डूबे रहते हैं।'

गायकी पुकार

दाँतों तले तृण दाबकर, हैं दीन गायें कह रहीं—
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही?
हमने तुम्हें माँ की तरह है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया॥

जो जन हमारे मांस से, निज देह-पुष्टि विचार के,
उदरस्थ हमको कर रहे हैं, क्रूरता से मार के।
मालूम होता है सदा धारे रहेंगे देह वे,
या साथ ही ले जायँगे, उसको बिना सन्देह वे॥

हा! दूध पीकर भी हमारा, पुष्ट होते हो नहीं,
दधि, घृत तथा तक्रादि से भी, तुष्ट होते हो नहीं।
तुम खून पीना चाहते हो तो यथेष्ट वही सही,
नर-योनि हो, तुम धन्य हो, तुम जो करो थोड़ा वही॥

क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं, बलहीन हैं,
मारो कि पालो, कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन हैं।
प्रभु के यहाँ से भी कदाचित् आज हम असहाय हैं?
इससे अधिक अब क्या कहें, हा! हम तुम्हारी गाय हैं॥

बच्चे हमारे भूख से रहते समक्ष अधीर हैं,
करके न उनका सोच कुछ, देती तुम्हें हम क्षीर हैं।
चरकर विपिन में घास फिर आती तुम्हारे पास हैं,
होकर बड़े वे वत्स भी बनते तुम्हारे दास हैं॥

जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी,
यह स्वर्ण-भारत-भूमि बस, मरघट-मही बन जायगी॥

—राष्ट्रकवि श्रीमैथिलीशरण गुप्त विरचित 'भारत-भारती' से

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

परमश्रद्धेय स्वामीजी श्रीरामसुखदासजी महाराजकी वाणीपर आधारित

‘गीता प्रकाशन’ का शीघ्र कल्याणकारी साहित्य

१. **संजीवनी-सुधा**—‘गीता साधक-संजीवनी’ पर आधारित शोधपूर्ण पुस्तक।
२. **सीमाके भीतर असीम प्रकाश**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
३. **बिन्दुमें सिन्धु**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
४. **नये रास्ते, नयी दिशाएँ**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
५. **अनन्तकी ओर**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
६. **स्वातिकी बूँदें**—मार्मिक प्रवचनोंका सार-संग्रह।
७. **अनुभव-वाणी**—चुने हुए अनमोल वचन। अँग्रेजी-भाषान्तरसहित।
८. **सहज गीता** (अँग्रेजीमें भी)—नये पाठकोंके लिये ‘साधक-संजीवनी’ के अनुसार गीताका सरल हिन्दीमें भावार्थ।
९. **हे नाथ! मैं आपको भूलूँ नहीं** (गुजराती व अँग्रेजीमें भी)—इस प्रार्थनाके रहस्य तथा महत्त्वका अद्भुत वर्णन।
१०. **कृपामयी भगवद्गीता** (गुजरातीमें भी)—गीताकी महिमा और उसकी विलक्षणताका वर्णन।
११. **लक्ष्य अब दूर नहीं** (गुजरातीमें भी)—परमात्मप्राप्तिके विविध सुगम साधनोंका अनूठा संकलन।
१२. **सहज समाधि भली** (गुजरातीमें भी)—‘चुप साधन’ का विस्तृत विवेचन।
१३. **अपने प्रभुको पहचानें**—भगवान्के समग्ररूपका विस्तृत विवेचन।
१४. **एक सन्तकी अमूल्य शिक्षा** (क्या करें, क्या न करें)
१५. **विलक्षण सन्त, विलक्षण वाणी**—प० श्रीस्वामीजी महाराजकी वसीयत-सहित।
१६. **गोरक्षा—हमारा परम कर्तव्य**
१७. **क्या करें, क्या न करें ?**—आचार-व्यवहार संबंधी शास्त्र-वचनोंका अनूठा संग्रह।
१८. **भवन-भास्कर** (परिशिष्ट-सहित)—वास्तुशास्त्रकी महत्त्वपूर्ण बातें।
१९. **सुखपूर्वक जीनेकी कला**—सर्वोपयोगी प्रश्नोत्तर।
२०. **क्या आप ईश्वरको मानते हैं ?**—साधकोंके लिये चेतावनी।
२१. **बोलनेवाली श्रीमद्भगवद्गीता** (अर्थसहित)—इसे पढ़नेके साथ-साथ शुद्ध उच्चारणमें सुन भी सकते हैं।
२२. **ग्लोब गीता**—आकर्षक ग्लोबके आकारमें सम्पूर्ण गीता।

गीता प्रकाशन,
कार्यालय—माया बाजार, पश्चिमी फाटक,
गोरखपुर—273001 (उ०प्र०)
फोन—09389593845; 07668312429
e-mail: radhagovind10@gmail.com